फरीदाबाद

मजदूर समाचार

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 262 1/– अप्रैल 2010

जुड़ने–जोड़ने के लिये
मजदूर समाचार तालमेल

★मिल कर कदम उठाने के लिये पहली जरूरत मिलने-जुलने के अवसरों की है। कारखानों में हम एकत्र होते हैं पर वहाँ सहज बातचीत पर अनेक रोक हैं। रोज 12-16 घण्टे की ड्युटियाँ और फिर आने-जाने में लगता समय , सब्जी-राशन लेना, पानी भरना, तेल-गैस के जुगाड़, भोजन बनाना अथवा बच्चों-पत्नी-पति के लिये समय। ऐसे में अधिकतर मजदूरों के लिये कहीं जा कर मिलने के लिये समय निकालना बहुत-ही मुश्किल है। नियमित तौर पर पड़ोसियों के कमरों में जाना बहुत दिक्कतें पैदा करता है। ऐसे में मजदूर समाचार तालमेल अपना प्रारम्भिक कार्य बस्तियों में मिलने-जुलने के लिये स्थानों का प्रबन्ध करने को बना रहा हैं। बहुत जल्दी ही फरीदाबाद, गुड़गाँव और ओखला औद्योगिक क्षेत्र में बैठकें स्थापित करने के हम प्रयास करेंगे। सुविधा अनुसार आधा घण्टा-एक घण्टा-दो घण्टे बिना किसी झिझक के बैठक में बित्ता सकते हैं और बिना किसी रोक के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान कर सकते हैं। जगह-जगह बैठकें स्थापित करने के लिये सुझावों व सहयोग का स्वागत है। .....

★संगठन में कोई पद नहीं होंगे। आमतौर पर बैठक के आधार पर सदस्य होंगे और वे सब समिति का गठन करेंगे। ..... औपचारिक पद तो होंगे ही नहीं, अनुभव-सक्रियता के कारण जो अनौपचारिक महत्व होंगे उन्हें बढाने की बजाय कम करने के प्रयास होंगे। ..... स्थाई मजदूर, कैजुअल वर्कर, ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर, कर्मचारी, सब मजदूर संगठन के सदस्य बन सकते हैं। निजी स्तर पर आर्थिक सहयोग का स्वागत करेंगे परन्तु संस्थाओं से पैसे नहीं लिये जायेंगे।

★मजदूर समाचार तालमेल पंजीकरण नहीं करवायेगा। कम्पनियों-सरकारों से संगठन बहस नहीं करेगा, उन्हें समझाने की कोशिशें नहीं करेगा, अधिकारियों के साथ समझौता वार्तायें नहीं करेगा। आमतौर पर संगठन प्रतिक्रियायें नहीं देगा। हम अपने हिसाब से कदम उठायेंगे और प्रतिक्रियायें देना कम्पनियों-सरकारों के पाले में रहने देंगे। सदस्य अपने सहकर्मियों के साथ मिल कर अपने-अपने कार्यस्थलों पर कदम उठाने के प्रयास लगातार करेंगे। मजदूर समाचार तालमेल औद्योगिक क्षेत्र के आधार पर कदम उठाने की कोशिशें करेगा।

★हम आशा करते हैं कि कुछ महीनों में मिल कर कदम उठाने की वो स्थितियाँ बन जायेंगी कि सदस्य व अन्य मजदूर छोटी-छोटी राहत हासिल कर सकेंगे।.....

★भारत सरकार के अधीन न्यायालयों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। कोई जज चाहे तो भी मजदूर-पक्ष में कुछ नहीं कर सकती-सकता क्योंकि एक तो प्रक्रिया ही टेढी-लम्बी है और फिर अपील-दर-अपील। हाँ, कम्पनियों द्वारा मजदूरों पर गैर-कानूनी दबाव डालने के लिये थानों में ले जा कर धमकाने जैसी हरकतों के खिलाफ राहत का संगठन प्रयास करेगा। .....

★..... आम मजदूर जो आसानी से कर सकते हैं वो करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित किया जायेगा। .....

★..... संगठन पूरे विश्व में मजदूरों की पहलकदमियों के संग खासकरके और जनता की पहलकदमियों के संग आमतौर पर तालमेलों के लिये विशेष प्रयास करेगा। ऐसे तालमेलों में योगदान देने के इच्छुक लोगों को किसी बैठक से जुड़े नहीं होने पर भी सदस्यता दी जायेगी।

सदस्य बनने के बारे में विचार कीजिये।

बैठकें :

1. सी एन 49 पहली मंजिल (गोपाल ज्वैलर्स के सामने) अल्ला मोहल्ला, मैखण्ड – ओखला ; 2 वीरवार को गायकवाड़ नगर (फरीदाबाद न्यू टाउन स्टेशन के पास)
3. रविवार को पुराने सरकारी स्कूल की बगल में, मुजेसर (फरीदाबाद)

शर्तों पर हस्ताक्षर

सितम्बर-अक्टूबर 09 में गुड़गाँव में **रिको ऑटो** और इधर फरवरी-मार्च में फरीदाबाद में **सेन्डेन विकास** तथा गुड़गाँव में **डेन्सो** के स्थाई मजदूरों को शर्तों पर हस्ताक्षर के जाल में फाँस कर कम्पनियों ने दुखद स्थितियों में धकेला है। फरीदाबाद में ही 1995-2005 के दौरान बड़े पैमाने पर स्थाई मजदूरों की छँटनी के लिये शर्तों पर हस्ताक्षर को कम्पनियों ने धारदार हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया था। संक्षेप में : छेड़-छेड़ कर कम्पनी स्थाई मजदूरों को "कुछ करने" को उकसाती और ऐसा होने पर कुछ को निलम्बित-कुछ को बरखास्त कर बाकी सब के लिये शर्तों पर हस्ताक्षर करने को फैक्ट्री में प्रवेश के लिये अनिवार्य करती। रोज कानून की धज्जियाँ उड़ते देख रहे मजदूरों में अनुभव-जनित कानून का भय फिर भी स्वाभाविक है। और फिर, निलम्बित-बर्खास्त सहकर्मियों के प्रति एकजुटता की भावना। ऐसे में कम्पनी के लिये काम कर रहे लोग कानून के भय को हव्वा बनाते हैं – "शर्तों पर हस्ताक्षर करने से हाथ कट जायेंगे।" वही लोग सहकर्मियों के लिये एकजुटता की भावना का दोहन कर रोके-निकाले गयों का "साथ देने" के लिये हस्ताक्षर नहीं करने को अनिवार्यता पेश करते हैं। तब सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर हो जाते हैं। समय के साथ गेट पर बैठते मजदूरों की सँख्या घटती जाती है। जब-तब के प्रदर्शन और त्रिपक्षीय समझौता वार्ताओं के बीच मजदूरों में फँस गये-फँसा दिये गये का अहसास बढता है। परिणाम दुखद – कम्पनी मजदूरों पर बड़ा हमला करने में सफल। यह तब की बातें हैं जब फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में आमतौर पर नब्बे प्रतिशत से अधिक मजदूर स्थाई होते थे। और , शर्तों पर हस्ताक्षर के जाल की रचना तब हुई थी जब फर्जी हड़तालें करवा कर मजदूरों पर बार-बार किये गये बड़े हमलों के कड़वे अनुभवों से सीखते हुये मजदूर "हड़ताल करवाने वालों" से दूरी रखने लगे। ऐसे में तालाबन्दियों का भी कम्पनियों ने खूब इस्तेमाल किया पर तालाबन्दी अनेक पेचिदगियाँ लिये होती है।

इधर फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य करते मजदूरों की रचना में बहुत परिवर्तन हुये हैं। आज स्थाई मजदूर पाँच से पचास प्रतिशत के दायरे में हैं। विभिन्न प्रकार के अस्थाई मजदूरों की भरमार है। कम्पनियाँ जिन अस्थाई मजदूरों को कार्य करते दिखाती हैं उन से अधिक सँख्या में मजदूरों को "अदृश्य" रखती हैं। आज फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में दिखाये जाते तथा "अदृश्य" अस्थाई मजदूर पचास से पिचानवे प्रतिशत हैं। ऐसे में स्थाई मजदूरों को अलग से संगठित करना, स्थाई मजदूरों से जुड़ी माँगों को केन्द्र में रखना स्वयं स्थाई मजदूरों के हित में नहीं है। फैक्ट्री में कार्य करते **सब** मजदूरों का जुड़ना-जोड़ना प्राथमिक आवश्यकता है। और, एक फैक्ट्री के टुकड़े कर अनेक फैक्ट्रियाँ बनाये जाने की वास्तविकता के दृष्टिगत अन्य फैक्ट्रियों में कार्य करते मजदूरों के साथ तालमेल अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। **(बाकी पेज तीन पर)**

फिर भी, कहीं "शर्तों पर हस्ताक्षर" की स्थिति बन ही जाती

गुड़गाँव में मजदूर

24 फरवरी को जारी आदेश अनुसार पहली जनवरी 2010 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4214 रुपये (8 घण्टे के 162 रुपये); अर्ध- कुशल अ 4344 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये) ; अर्ध- कुशल ब 4474 रुपये (8 घण्टे के 172 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4604 रुपये (8 घण्टे के 177 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4734 रुपये (8 घण्टे के 182 रुपये) ; उच्च कुशल मजदूर 4864 रुपये (8 घण्टे के 187 रुपये) । कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है ।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते : 1. श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ 2. श्रम सचिव, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ

ऋचा एण्ड कम्पनी मजदूर : "239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागे काटने के लिये 30 महिला और 40 पुरुष मजदूर रखे हैं जिनकी तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। मोती-सितारे, आल्टर के लिये टी पी में 40 महिला मजदूर हैं जिन्हें अकुशल श्रमिक वाला न्यूनतम वेतन देते हैं पर ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कार्ड नहीं, ओवर टाइम सिंगल रेट से। यहाँ **असमारा, के डी सी, चिकोस, गैप, लीज** का माल बनता है। सिलाई कार्य में एक शिफ्ट है, हर रोज सुबह 9 से रात 12 तक काम। फिनिशिंग विभाग में दो शिफ्ट हैं। महिला मजदूरों को सुबह 7½ बजे बुलाते हैं और रात 9 बजे छोड़ते हैं, रात 10 तक भी जबरन रोक लेते हैं – मना करने पर तुरन्त निकाल देते हैं। पुरुष मजदूरों को रात 12 बजे बाद भी जबरन रोकते हैं – 27 मार्च को मजदूरों ने मना किया तब इनचार्ज ने कुछ लोगों को साथ ले कर रात 9 बजे मजदूरों से मारपीट की और जबरन रोक कर काम करवाया। कम्पनी 2 घण्टे प्रतिदिन ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करती है और बाकी के घण्टों का सिंगल रेट से। पाँच मिनट की देरी पर गेट बन्द और छुट्टी करने पर बहुत गाली। दो-तीन दिन छुट्टी करने पर कार्ड रोक लेते हैं, 500 रुपये दो तब कार्ड देते हैं।"

इनस्टाइल श्रमिक : " 378 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में वेतन हर महीने देरी से – फरवरी की तनखा 25 मार्च को दी ! महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। पीने का पानी ठीक नहीं। शौचालय बहुत गन्दे। साहब गाली देते हैं।"

कैलाश रिबन कामगार : "403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक अवकाश के दिन भी काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2700-3000 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

पटरी दुकानदार : " उद्योग विहार में 1000 पटरी वाले हैं। हर फेज में एक कैन्टीन थी और कैन्टीनवाले अपने-अपने क्षेत्र में प्रत्येक पटरी दुकानदार से हर महीमे 500 रुपये लेते थे। ऐसा जनवरी 09 तक चला। कैन्टीनों के लाइसेन्स खत्म हो गये, अब उद्योग विहार में कोई कैन्टीन नहीं है। वर्षों से पटरी पर काम कर रहों को इधर एच एस आई डी सी के लोग एकाएक भगाने लगे हैं। हम इक्ट्ठे हो कर तीन बार नेताओं के पास गये। नेताओं के संग दिसम्बर 09 में उद्योग विहार फेज-5 स्थित एच एस आई डी सी कार्यालय पर प्रदर्शन किया। अधिकारियों को ज्ञापन दे कर नेता बोले दुकान लगाओ, अनुमति मिलेगी। लेकिन एच एस आई डी सी वाले आते हैं और हमारे सामान फेंक देते हैं। प्रदर्शन के बाद नेता दिखाई नहीं दिये।"

ओमेगा एक्सपोर्ट वरकर : " 863 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में प्रतिदिन सुबह 9½ से रात 1 बजे तक की ड्युटी है। रोटी के लिये मात्र 20 रुपये देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। महिला मजदूरों को रात 8-9 बजे छोड़ देते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे हैल्परों की तनखा 3500 और ठेकेदारों के जरिये रखों की 3000 रुपये। डेढ सौ सिलाई कारीगर पीस रेट पर – काम पहले करवाते हैं, रेट बाद में बताते हैं। फैक्ट्री में काम करते 700 मजदूरों में 100 पुरानों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

स्मृति एप्रेल्स मजदूर : " 156 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में प्रतिदिन सुबह 9½ से रात 10-12 बजे तक की शिफ्ट में चमड़े के जैकेट बनते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। इस समय 150 मजदूर हैं पर अप्रैल में फिर 1000 हो जायेंगे। गाँव से लौटते हैं तब जाने से पहले किये हफ्ता-दस दिन काम के पैसे नहीं देते। तनखा के 5090 बनते हैं तो 5000 रुपये ही देते हैं – 10 रुपये दो तो उन्हें ले कर 100 रुपये का नोट नहीं देते, कहते हैं बाद में लेना। बाद में 90 रुपये माँगने पर कहते हैं दे दिये थे।"

चोयस एक्सपोर्ट श्रमिक : " 358 उद्योग विहार फेज-2 स्थित बड़ी फैक्ट्री में हाथ से कढाई करती महिला मजदूरों की तनखा 3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जनवरी और फरवरी की तनखायें 20 मार्च तक नहीं दी तो 10 महिला मजदूरों ने नौकरी छोड़ दी और किये काम के पैसों के लिये फैक्ट्री के चक्कर लगा रही हैं।"

कलमकारी कामगार : " 383 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हर महीने तनखा में से 300-400 रुपये खा जाते हैं। सुबह 9 से रात 8 ¾ की ड्युटी है। ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 163 रुपये देते हैं जबकि लिखा 173 रुपये है। कार्मिक विभाग वाले गाली देते हैं। तनखा से पी.एफ. की राशि काटते हैं पर 2-3 महीने के फण्ड का फार्म नहीं भरते, फार्म फाड़ देते हैं, पी.एफ. नम्बर बताते नहीं। पानी की बहुत दिक्कत है। शौचालय बहुत गन्दे हैं। यहाँ **मदरहुड** का माल बनता है।"

सुरक्षा कर्मी : "जी एल कॉम्पलैक्स, डुण्डाहेड़ा में कार्यालय वाले **युवा सेक्युरिटी ग्रुप** ने 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 30 दिन के 5000 रुपये में कार्य पर रखा। तबीयत खराब होने पर 15 दिन कार्य करने के बाद नौकरी छोड़ दी। किये काम के पैसे माँगे तो बोले कि 15 दिन के पैसे नहीं दिये जाते।"

कंचन इन्टरनेशनल वरकर : "872 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सितम्बर 09 से फरवरी 10 तक की तनखायें आज 30 मार्च तक नहीं दी हैं। हम ने 12 मार्च को श्रम विभाग में शिकायत की तो बोले कि 29 मार्च को जाँच के लिये आयेंगे। श्रम विभाग अधिकारी 29 मार्च को साँय 5½ बजे तक फैक्ट्री नहीं आये थे।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : " 225 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 11-12 बजे तक काम करवाते हैं। शनिवार को तो जबरन पूरी रात रोकते हैं – शनिवार सुबह 9 से रविवार सुबह 6 बजे तक लगातार काम करवाते हैं। रोटी के लिये पैसे नहीं देते, 23 घण्टे रोकतें हैं तब भी नहीं देते। प्रतिदिन 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और बाकी समय के सिंगल रेट से।"

मार्वेल श्रमिक : " 370 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 और कारीगरों की 4100-4200 रुपये। सुबह 9½ से रात 11 बजे तक रोज ड्युटी। भोजन अवकाश का एक घण्टा काट लेते हैं और बाकी ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 400 मजदूरों में 200 की हैं। जनरल मैनेजर बहुत गाली देता है। यहाँ **चिकोस** का माल बनता है।"

लाइफ स्टाइल कामगार : " 175 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 80 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कम्प्युटर इम्ब्राइड्री का कार्य करते हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 4000 और कारीगरों को 5-6000 रुपये देते हैं। वेतन हर महीने देरी से – फरवरी की तनखा 17 मार्च को दी। ई.एस.आई. व पी.एफ. दो-चार पुरानों के ही हैं।"

गोपाल क्लोथिंग वरकर : " 274 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9½ की शिफ्ट है और महिला मजदूरों को जबरन 10½ तक तथा पुरुष मजदूरों को रात 2 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्प्युटर इम्ब्राइड्री विभाग में मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और उनकी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम के पैसे नहीं।" **ओरियन कन्वीनियन्स मजदूर :** " 90 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में चमड़े की बैल्ट, बैग बनाते मजदूरों की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटी पर ठेकेदार वर्ष-भर पहले चला गया और कम्पनी फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरती।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : " उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को फरवरी की तनखा 20 मार्च को दी, 3914 रुपये ही दी जबकि 1 जनवरी से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 4214 रुपये है।"

उथल-पुथल

★ **म्यांमार** (बर्मा) में रंगून क्षेत्र में हजारों मजदूरों नें फरवरी तथा मार्च महीनों में वेतन वृद्धि और कार्य स्थितियों में सुधार के लिये काम बन्द किया।

★ कम्पनी दिवालिया, बैंक दिवालिया, सरकार दिवालिया..... यूरोपीय संघ की सदस्य **यूनान सरकार** को दिवालियेपन से उबारने के लिये अतिरिक्त कर्ज जुटाने के वास्ते जर्मनी तथा फ्रान्स जैसी ताकतवर सरकारों ने शर्तें रखी हैं कि यूनान सरकार नागरिकों पर अधिक बोझ डाले ताकि दिये हुये एवं दिये जाने वाजे क़र्ज की वापसी का प्रबन्ध हो सके। यूनान सरकार के इस दिशा में प्रयासों का चौतरफा विरोध बढ़ता जा रहा है। ओलम्पिक एयरवेज कर्मियों ने छँटनी के विरोध में 4 मार्च को सरकारी कार्यालय पर कब्जा किया और अधिकारियों की गिरफ्तार करने की माँग पर पुलिस ने हफ्ते-भर कार्रवाई नहीं की। कर अधिकारियों द्वारा 48 घण्टे की हड़ताल। न्यायाधीशों और न्यायिक कर्मियों द्वारा प्रतिदिन 4 घण्टे काम बन्द। तीन बड़े नगरों में 6 मार्च से कूड़ा नहीं उठा – कचरा एकत्र करने वाले मजदूरों ने कूड़ा डिपो के रास्ते बन्द कर दिये। कपड़ा फैक्ट्री मजदूरों ने प्रदर्शनों और काम बन्दियों के बाद पहली मार्च को दो बैंकों पर कब्जा कर लिया..... और 11 मार्च को सम्पूर्ण यूनान में काम ठप्प। बस, ट्राम, मैट्रो, ट्राली बसें, लोकल ट्रेनें अड्डों से बाहर नहीं निकली। वायु यातायात नियन्त्रण कर्मियों ने यूनान के अन्दर और बाहर वायुयानों का आना-जाना बन्द किया। सब चिकित्सक, नर्स, एम्बुलैन्स कर्मी हड़ताल पर। सब बैंक बन्द। नगर निगम कार्यालय बन्द। कोरिन्थ कैनाल में यातायात नियन्त्रण करने वाले मजदूरों ने इस महत्वपूर्ण जल मार्ग को जहाजों के लिये बन्द कर दिया। सब जहाज बन्दरगाहों में स्थिर। डाकखाने बन्द। सब विद्यालय और विश्वविद्यालय बन्द। अग्निशमन कर्मी और पुलिस कर्मी भी ड्युटी नहीं कर रहे – पुलिस कर्मियों का राजधानी एथेन्स में पुलिस मुख्यालय पर प्रर्दशन। अखबार, रेडियो, टी वी, इलेक्ट्रोनिक समाचार वेबसाइट ठप्प – 24 घण्टे समाचारों का कोई प्रसारण नहीं। यूनान की एक करोड़ दस लाख आबादी है और 11 मार्च को 30 लाख लोग यूनान सरकार, यूरोपीय संघ के हमलों के विरोध में सड़कों पर आये।

★ संकट का बोझ छात्रों, अध्यापकों, कर्मचारियों पर डालने के लिये **अमरीका** में कैलिफोर्निया प्रान्त की सरकार द्वारा फीस में 32 प्रतिशत वृद्धि, नौकरियाँ कम करने, कार्य-भार बढाने का विरोध बढता जा रहा है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के जिन परिसरों को ठण्डा माना जाता था वहाँ भी 4 मार्च को लोग सड़कों पर थे। जो परिसर 1968 से उग्र माने जाते हैं वहाँ विद्यमान संगठनों पर नेतृत्व के लिये निर्भर रहने की बजाय आम सभाओं द्वारा गतिविधियों का संचालन किया गया। विरोध के फैलने की तेजी की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। कैलिफोर्निया प्रान्त के विश्वविद्यालय परिसरों से आरम्भ हुये विरोध ने 4 मार्च को अमरीका में 32 प्रान्तों के विश्वविद्यालयों में दस्तक दी।

(जानकारियाँ इन्टरनेट के माध्यम से मित्रों से मिली हैं।)

पन्द्रह वर्ष

1995 में तिलक नगर, दिल्ली में स्टीरियो डेक बनाने वाली मोहन इन्डस्ट्रीज में 700 रुपये तनखा में लगा। सन् 2003 में नौकरी छोड़ी तब तनखा 2100 रुपये थी। पाँच हजार रुपये तनखा में राजपुरा, पंजाब गया शहद की कम्पनी, केजरीवाल बी-केयर में काम करने। वर्ष-भर बाद वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर, कनॉट प्लेस, दिल्ली में कार्यालय वाली केजरीवाल इन्टरप्राइजेज में भेज दिया गया। यहाँ नारियल का पानी, दूध, जैम का कारोबार। तनखा वही 5000 रुपये पर 2005 में कम्पनी बन्द हो गई। तब उद्योग विहार, गुड़गाँव पहुँचा। यहाँ 3 साल में 15 फैक्ट्रियों..... ईसा क्लैक्शन, मोडलामा, नितिन क्लोथिंग, गोपाल क्लोथिंग, धीर इन्टरनेशनल, गुलाटी एक्सपोर्ट हाउस, सरगम, राधनिक, ऋचा, ओरियन्ट क्लोथिंग..... में क्वालिटी में चैकर का कार्य किया। आठ घण्टे की ड्युटी नाम की है। बारह घण्टे सामान्य है, 15 घण्टे ड्युटी भी आम बात है। व्यवहार हर जगह गड़बड़। ऐसे में दिसम्बर 09 में बिजवासन में फल व सब्जी की दुकान की। पुल बनने लगा तो 23 फरवरी से सड़क बन्द कर दी गई – दुकान ठप्प हो गई। अब खुद सड़क पर हूँ। उद्योग विहार में फिर काम ढूँढ रहा हूँ।

शर्तों पर हस्ताक्षर.. (पेज एक का शेष)

है तो "अन्दर जाने" अथवा "बाहर रहने" को बहुत भिन्न के तौर पर नहीं लेना चाहिये। आज नई भर्ती के जरिये इन परिस्थितियों में उत्पादन जारी रखने ने बातें काफी स्पष्ट कर दी हैं। कम्पनी की तैयारियों और अपनी स्थिति के आधार पर बाहर रहने अथवा अन्दर जाने का जो भी निर्णय लिया जाये, नये सिरे से बहुत-कुछ करना बनता है। बाहर रहते हैं तो गेट पर बैठ कर ताश खेलने, श्रम विभाग के चक्कर लगाने, चिन्ता करने की राह दलदल की राह है। टोलियाँ बना कर अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों के पास जाना, कम्पनी की अन्य फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों के साथ सम्बन्ध बढाना, फैक्ट्री के उत्पादन की खपत वाले क्षेत्रों में तालमेल बढाना बनता है। अन्दर जाते हैं तो बहुत धीरज के साथ कार्य करते हुये कम्पनी पर दबाव डालने के लिये अनेक कदमों की श्रृंखला बनाना बनता है। बाहर रहें चाहे अन्दर जायें, तालमेलों को बढाना तो बनता ही बनता है।

कानून हैं शोषण के लिये छूट है कानून से परे शोषण की

जे एल ऑटो पार्ट्स मजदूर : "14 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2300 रुपये। कम्पनी ने जिन्हें स्वयं रखा है उन मशीन चलाने वाले मजदूरों की तनखा 2800 और चार ठेकेदारों के जरिये रखे ऐसे वरकरों की तनखा 3000 रुपये। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और उन में से भी 100-200 रुपये हर महीने खा जाते हैं। बारह घण्टे की ड्युटी के बाद भी जबरन रोक लेते हैं और तब रोटी के लिये मात्र 20 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में काम करते करीब 500 मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. 20-25 की ही हैं। शौचालय बहुत गन्दे।"

एसोसियेट एप्लाइन्सेज श्रमिक : "प्लॉट 1 सैक्टर-56 ए स्थित फैक्ट्री में चूल्हा असेम्बली में एक ठेकेदार के जरिये रखे 55 मजदूरों को जनवरी और फरवरी की तनखायें आज 30 मार्च तक नहीं दी हैं। कुछ मजदूरों ने नौकरी छोड़ दी, नये भर्ती कर लिये। छोड कर गये महिला व पुरुष मजदूर तनखाओं के लिये फैक्ट्री के चक्कर लगा रहे हैं। ठेकेदार कहता है कि कम्पनी ने चेक नहीं दिया है।"

इको ऑटो कामगार : "प्लॉट 20 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 50 स्थाई मजदूरों ने मई 09 में हड़ताल की तब कुछ को जून में और बाकी को दिसम्बर तक हिसाब दे दिया। अब यहाँ 75 कैजुअल वरकर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 75 मजदूर हीरो होण्डा के लिये ऑयल पम्प और हीरो होण्डा, यामाहा, एनफील्ड, बजाज दुपहियों के लिये कारब्युरेटर बनाते हैं। प्रतिदिन पौने दस घण्टे की ड्युटी और सप्ताह में 5 दिन कार्य के कारण आमतौर पर अगस्त 08 से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी मजदूरों का नहीं बनता। दो शिफ्ट हैं और महीने में 50-100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। अगस्त 08 से कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को वर्ष में मात्र तीन त्यौहारी छुट्टियाँ देते हैं; बाकी ऐसी छुट्टियाँ देनी बन्द कर दी हैं। कैजुअलों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस देते ही नहीं। दिसम्बर 09 के बाद कैजुअल वरकरों को पे-स्लिप देनी बन्द कर दी है। अब लिफाफे में पैसे पकड़ा देते हैं – कितनी हाजिरी, कितना पी.एफ., कितनी ई.एस.आई., कुछ नहीं बताते।"

सेन्डेन विकास वरकर : "प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में 65 स्थाई मजदूर, तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 400 वरकर और स्टाफ के 450 लोग हैं जिनमें मोल्डिंग विभाग के मजदूर भी मिला दिये गये हैं। स्थाई काम है और आठ-दस वर्ष से लगातार काम कर रहे मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे अस्थाई मजदूर हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा कम, जबरन ओवर टाइम – साप्ताहिक अवकाश के दिन भी जबरन ड्युटी। महीने में 150-225 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और 400-600 रुपये हर महीने खा भी जाते हैं। सुरक्षा के लिये चिन्तित स्थाई मजदूर संगठित होने के लिये प्रयासरत थे..... (अगले अंक में)

दिल्ली में मजदूर

● *1 फरवरी 2010 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक 5272 रुपये (8 घण्टे के 203 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 5850 रुपये (8 घण्टे के 225 रुपये); कुशल श्रमिक 6448 रुपये (8 घण्टे के 248 रुपये)* /स्टाफ में स्नातक एवं अधिक : 7020 रुपये (8 घण्टे के 270 रुपये)। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054

डिम्पल एक्सपोर्ट मजदूर : "बी-35 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 150-160-170 रुपये देते हैं। तीन सौ से ज्यादा टेलरों ने 17 तथा 18 मार्च को काम बन्द रखा और 8 घण्टे के 248 रुपये देने को कहा। ठेकेदार बोला कि पुरुषों को 220 तथा महिलाओं को 190 रुपये देगा और इन में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटेगा पर स्लिप नहीं देगा। इस पर सिलाई कारीगर राजी नहीं हुये और 20 मार्च को 248 तथा स्लिप के लिये 2 घण्टे काम बन्द कर तय किया कि 10 अप्रैल को तनखा मिलने के बाद आगे देखेंगे व इस बीच किसी को नौकरी से नहीं निकालने देंगे। काम बन्द करने के बाद से ठेकेदार ज्यादा चिल्लाने लगा है। कमीशन के चक्कर में मास्टर उत्पादन बढाने के लिये परेशान करने लगे हैं। शौचालय भी नहीं जाने देते। भोजन अवकाश के समय 12½ बजे ही उठने दे रहे हैं। लगातार बैठे-बैठे काम करने से कारीगरों के पैर सूज जाते हैं। इधर 25 मार्च से ड्युटी सुबह 9 से साँय 5½ की कर दी है। जबकि, इससे पहले 5½ बजे छोड़ते ही नहीं थे – या तो पूरे दिन छुट्टी करो या रात 9 बजे बाद छूटो (सिर दर्द है तो लो यह दवा ले लो)। फिनिशिंग विभाग के मजदूर असमंजस में हैं, वे मिल कर काम बन्द नहीं कर पाये हैं – धागे काटती महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 100 रुपये देते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

ग्रीन हाउस हेस्टोफ्ट (स्लाइस ऑफ इटली) श्रमिक : " ए-99/2 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री तथा 15 आउटलेटों में 500 वरकर काम करते हैं। फैक्ट्री में आने का समय है पर छूटने का नहीं। कहने को 10-10 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर 12 घण्टे तो रोज रुकना ही पड़ता है और महीने में 5 से 15 बार 14 घण्टे काम करना पड़ता है। कहने को 10 घण्टे ड्युटी पर हैल्परों को 26 दिन के 2700-4500 रुपये देते हैं पर यह वास्तव में 12 घण्टे रोज पर हैं। दस घण्टे में कोई ओवर टाइम नहीं होता, 12 घण्टे के लिये कोई अतिरिक्त भुगतान नहीं। जब 14 घण्टे रोकते हैं तब भी ओवर टाइम की बात नहीं करते बल्कि इसे स्टे कहते हैं और 50 रुपये देते हैं। आउटलेटों पर डाइनिंग गर्ल व डाइनिंग बॉय की तनखा 4500 तथा मैनेजरों की 5-6000 रुपये। बात-बात पर दिहाड़ी काट लेते हैं – दाढी नहीं बनाई, चप्पल पहनी, 5 मिनट देर से आये। तनखा के समय हर महीने विवाद होते हैं, खास करके आउटलेटों पर। फैक्ट्री में मजदूरों का शौचालय बहुत गन्दा है।"

रत्ना ऑफसैट कामगार : " सी-101, 102 डी डी ए शेड्स ओखला फेज-1 स्थित प्रिन्टिंग प्रेस में काम करते 16 मजदूरों को दिहाड़ी पर बताते हैं पर पैसे महीने में देते हैं और इन्हें 8 घण्टे के 100 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कोई छुट्टी नहीं। जो 25 मजदूर तनखा पर हैं उनमें मशीनों पर काम करते अर्ध-कुशल श्रमिकों की तनखा 2500-3000, प्लेट मेकिंग कारीगरों की 3500-4500 और ऑपरेटरों की 5000-7000 रुपये। इन 25 की साप्ताहिक तथा त्यौहारी छुट्टियाँ हैं पर इन में भी ई.एस.आई. व पी.एफ. 8 की ही हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और महीने के तीसों दिन काम – वर्ष में सिर्फ 3 दिन प्रेस बन्द रहती है और उन दिनों भी कम्पनी काम के लिये बुलाती है पर मजदूर जाते नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और महीने में 10-15 घण्टे खा भी जाते हैं। पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं है – बगल की झुग्गियों से लाओ। शौचालय गन्दा। बदतमीजी, गालियों की भरमार और मारपीट भी। तनखा हर महीने देरी से– जनवरी में 12 जनवरी की रात, 13 की दिन व रात की शिफ्टों में मजदूरों ने काम बन्द रखा तब 15 जनवरी को दिसम्बर की तनखा दी थी।"

सर्वोटेक इलेक्ट्रीकल्स वरकर : " 252-ए, पहली मंजिल, विजय टावर, शाहपुर जाट, नई दिल्ली में कार्यालय वाली कम्पनी निर्माण के समय बिजली सम्बन्धी कार्य करवाती है। वर्षों से कार्यरत प्रोजेक्ट इलेक्ट्रिशियनों को अस्थाई मजदूर रखा गया है। कुशल श्रमिकों की तनखा 4600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, वार्षिक बोनस नहीं। बहुत दुर्व्यवहार होता है।"

आर एम पी ग्रुप मजदूर : " ए-51 ओखला फेज-1 में ग्रुप की **आर एम पी इन्टरनेशनल** फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 125 मजदूरों में हैल्परों को 12 घण्टे के 80-100 रुपये और सिलाई कारीगर पीस रेट पर, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई मजदूर 50 थे, छह महीने पहले 25 निकाल दिये। महीने के तीसों दिन फैक्ट्री में काम। ए-70 ओखला फेज-2 में ग्रुप का स्टोर व कार्यालय है और यहाँ काम करते 50 लोगों को प्रतिदिन 9-9½ घण्टे ड्युटी पर 3000-5500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं थी – 2008 में छापा पड़ा तो 2007 से ई.एस.आई. व पी.एफ. जमा करवानी शुरू की पर..... पर दस वर्ष से ओखला में काम कर रहे वरकरों को 2007 से पानीपत फैक्ट्री में दिखाया है। गाली हर समय साहबों के मुँह पर रहती है। बहुत जरूरी होती है तब भी छुट्टी से बचना पड़ता है, हारी-बीमारी में भी ड्युटी करते हैं क्योंकि एक दिन छुट्टी करने पर तीन दिन के पैसे काट लेते हैं। दिवाली पर (2009) बोनस नहीं दिया और हस्ताक्षर करवाने लगे। जब पैसे दे नहीं रहे तो दस्तखत क्यों करें कह कर वरकरों ने हस्ताक्षर नहीं किये। एक्सीडेन्ट में एक फील्ड वरकर का कन्धे से हाथ गया। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी – ई.एस.आई. नहीं करवाई थी। वरकरों के दबाव के बाद कम्पनी प्रायवेट में इलाज करवा रही है। एक्सीडेन्ट के बाद कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवाने लगे तो वरकरों ने एतराज किया और कम्पनी को उन कागजों को फाड़ना पड़ा जिन पर एक-दो के दस्तखत करवा लिये थे। ग्रुप की कम्प्युट्राइज्ड इम्ब्राइड्री की बड़ी फैक्ट्री पानीपत में है और नई फैक्ट्री फरीदाबाद में सैक्टर-59 में बन रही है।"

सुरक्षा कर्मी : "आनन्द पर्वत, दिल्ली में कार्यालय वाली **राजधानी सेक्युरिटी** कम्पनी गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4050 रुपये देते हैं। लगातार 36 घण्टे ड्युटी पर 12 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं और भुगतान सिंगल रेट से। वर्दी में जूते नहीं देते पर जूते नहीं पहने हों तो तनखा से 500 रुपये काट लेते हैं.... और, रोज पालिश करो, रोज दाढी बनाओ।"

यूनीस्टाइल श्रमिक : " बी-51 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिये जाते और तनखा हर महीने देरी से। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। पीने का पानी ठीक नहीं, मजदूर बीमार पड़ते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं; सिलाई कारीगर पीस रेट पर और फिनिशिंग में महिला मजदूरों की तनखा 2000-2200 रुपये। कम्पनी ने जिन्हें स्वयं रखा है वो भी कैजुअल तथा डेली वेज वरकर हैं, वर्षों से काम कर रहे भी स्थाई मजदूर नहीं और दस-पन्द्रह वर्ष से काम कर रहों की तनखा 4100 रुपये से कम है।"

केल्विन इलेक्ट्रोनिक्स कामगार : " सी-65 डी एस आई डी सी कॉम्पलैक्स ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000-2700 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं।"

के के एक्सपोर्ट वरकर : " ए-255 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9½ बजे आरम्भ होती है पर छूटने का कोई समय नहीं है। हैल्परों की तनखा 3000 और सिलाई कारीगरों की 3800-4000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 मजदूरों में दो-चार पुरानों की ही हैं।"

कूरियर मजदूर : "101 डी एस आई डी सी ओखला फेज-1 में **डी टी डी सी** की शाखा में वरकरों की तनखा 3000 थी, अब 3300 रुपये की है।"

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011